''वार्षिक मीटिंग'' ओम् शान्ति अप्रैल 2014 मधुबन

स्व-उन्नति और सेवा के लिए प्राण अव्यक्त बापदादा की विशेष प्रेरणायें

(2013-2014)

1. अभी बापदादा चाहते हैं कि हर बच्चा स्व स्थिति और सेवा की स्थिति दोनों में तीव्र हो, सदा अचल अडोल रह आगे से आगे बढ़ता जाए।
2. आजकल के वायुमण्डल के प्रभाव को पावरफुल सकाश द्वारा परिवर्तन करने की आवश्यकता है, इसके लिए मन्सा शक्ति को और पावरफुल बनाओ। लोगों में अभी सुनने सुनाने की शक्ति कम है इसलिए वृत्ति द्वारा वृत्तियां बदलने की आवश्यकता है। अब वृत्तियों को बदलने की शक्ति और ज्यादा कार्य में लगाओ।
3. अभी मन्सा शक्ति द्वारा वायब्रेशन चेंज करना, वातावरण चेंज करना, यह सुनने सुनाने से नहीं होगा लेकिन अपने मन की शुभ कामना, मनुष्यों की वृत्ति, दृष्टि, कृति को परिवर्तन कर सकती है।
4. जैसे सेवा का उमंग-उत्साह है ऐसे अभी स्वराज्य अधिकारी बनने की विधि और उस विधि को प्रैक्टिकल अनुभव करना, इस तरफ भी अटेन्शन देना है।
5. अभी चारों ओर जो भ्रष्टाचार की बातें चल रही हैं, इस वातावरण को मन की शक्ति द्वारा परिवर्तन कर सबके मन में परमात्म याद का उमंग-उत्साह पैदा करो।
6. अगर कोई थोड़ा भी कमजोर होता है तो उनको अपने सहयोग द्वारा, चाहे स्वयं चाहे बड़ों से सहयोग दिलाते रहना। परोपकारी बन स्व-उपकार और पर-उपकार दोनों को अटेन्शन में रख बढ़ते भी रहना और बढ़ाते भी रहना।
7. सभी बच्चे सदा खुश आबाद रहने वाले, खुशनसीब, खुशनुमा हैं। बापदादा एक-एक बच्चे की मुस्कराती हुई सूरत को देख खुश हो रहे हैं। सदा ऐसे ही मुस्कराते खुशी में नाचते बढ़ते चलो, बढ़ाते चलो।
8. सदा खुश हैं और सदा खुश रहेंगे, कोई भी बात आये, बात बाप को दे दो और आप मुस्कराते रहो। सदा सर्व के प्यारे, देहभान से न्यारे बाप को दिल में समाते हर कदम उठाना।
9. अभी जो सभी के मस्तक में उमंग की लहरें देख रहे हैं, यह अभी का उमंग सदा रहे, यह विशेष ध्यान रखना। बापदादा सभी बच्चों के चेहरे में सदा बेफिक्र बादशाह की झलक देखने चाहते हैं।
10. रोज़ अपने दिल में कोई न कोई विशेष उमंग लाओ और चेक करो कि वह उमंग, उमंग रहा या बदली हुआ? बापदादा यही चाहते हैं कि हर बच्चे की सूरत में सदा कोई न कोई गुण धारण करने का उमंग हो, अगर गुण धारण करेंगे तो अवगुण स्वत: खत्म हो जायेगा।
11. कोई भी कमजोरी स्वप्न मात्र वा संकल्प में भी रही हुई हो तो उसे आज दृढ़ संकल्प से बाप को दे दो, फिर वापस नहीं लेना, तो बापदादा विशेष अमृतवेले मदद देंगे। अमृतवेला करने के बाद संकल्प को चेक करना और सच्ची दिल से दृढ़ संकल्प करना तो बापदादा की एकस्ट्रा मदद मिलेगी।
12. अभी आगे चल करके जो समय आने वाला है, उस समय को देख बापदादा इशारा दे रहे हैं कि हर एक संकल्प में हर रोज़ दृढ़ता चाहिए। कोई भी संकल्प ढीला होने नहीं देना। करके ही दिखाना है, यह दृढ़ संकल्प करना। जैसे अभी सभी खुशनुमा देखने में आ रहे हो ऐसे अपनी स्थिति को दोहराना।
13. जैसे बाप सदा वाह वाह लगता है, वैसे बच्चे भी वाह वाह! सुबह को उठके याद करना मैं कौन सा बच्चा हूँ? वाह वाह बच्चा हूँ! इसमें अटेन्शन देना। अगर कभी मूड आफ हो तो वाह वाह शब्द याद रखना। हूँ ही वाह वाह! तो सदा खुश रहेंगे। कुछ भी बात हो जाए, बात आई और गई, आप क्यों उसको पकड़ लेते हो? कोई बात ठहरती नहीं है, चली जाती है।
14. ब्रह्मा बाप की विशेष शिक्षा है - बापदादा के स्मृति स्वरूप बनो। बापदादा दोनों को फालो करो। अकेले बाप भी नहीं, अकेले ब्रह्मा बाप भी नहीं। जैसे ब्रह्मा बाप साकार में रहे, साकार में बच्चों के साथ भी पार्ट बजाया और बाहर की सेवा

में भी पार्ट बजाया, ऐसे आप भी फालो करो।

15. आज की दुनिया में फालो करना मुश्किल भी लगता है लेकिन ब्रह्मा बाप ने कितना एक्यूरेट पार्ट बजाया। ब्रह्मा बाप ने भी तो सामना किया लेकिन पास हो गये। तो आप सब भी यह दृढ़ संकल्प करो कि अन्त तक पार्ट बजाते हर पार्ट में पास होना ही है।

16. अभी विजय पाने की मौसम है। संगमयुग की इस विशेषता को यूज़ करते चलो। पुरुषार्थ में कभी थकना नहीं, कोई भी छोटी-मोटी बात आती है, मदद लो। अगर किसी से मदद नहीं लेनी है तो योगबल से चेक करके उसका कोई न कोई हल ढूंढो।

17. सेवा के साथ स्वयं को भी सम्पन्न बनाओ। सेवा में इतने बिजी नहीं हो जाओ जो स्वयं को देखने का समय नहीं मिले। स्वयं को भी देखो और समय को भी देखो।

18. सभी खुशमिजाज़ तो रहते ही हो, अगर किसी कारण से खुशमिजाज़ नहीं रह सकते तो जिसमें फेथ हो, भावना हो उससे सहयोग लो क्योंकि बापदादा जानते हैं कि छोटी-छोटी बातें किस समय भी आ सकती हैं इसलिए स्वयं को सदा अलर्ट रखना।

19. अभी समय प्रमाण हर स्थान पर सन्तुष्टता का वायुमण्डल होना चाहिए। अगर असन्तुष्टता है तो किसी के भी सहयोग से उसे ठीक करो। स्वयं को पावरफुल जरूर बनाओ।

20. बापदादा इशारा दे रहे हैं कि अचानक के लिए तैयार रहो। फिर ऐसे नहीं कहना यह तो पता ही नहीं था, होना है, होगा अचानक। जब आप सबके मन से हल्का हो जायेगा तभी होगा इसलिए अपने आपको चेक करो बाप समान बने हैं?

21. बाप चाहता है मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क.. इन सब बातों में ऐसी अवस्था हो, जो कुछ भी अचानक हो तो सामना कर सको। इन्टरनल पावर से आत्मा सदा अटेन्शन में रहे, सदा तीव्र पुरुषार्थी रहे, स्व परिवर्तन और चारों ओर के परिवर्तन में सहयोगी बनें।

22. अगर कोई विघ्न है या कोई हलचल है तो अपने दादियों को या जिसमें भी आपका फेथ हो, उनको सुना देना, अन्दर में रखना नहीं, कोई न कोई इलाज ले लेना क्योंकि सब अचानक होगा, उस समय पुरुषार्थ कर नहीं सकेंगे।

2.- अभी चेक करो - कुछ भी अचानक हो जाए, हलचल हो जाए तो इतनी शक्ति है जो स्वयं को भी बचायें, वायुमण्डल में भी प्रभाव डालें, औरों के भी मददगार बनें!

24. अभी यह कमाल दिखाओ जो हर एक मन्सा, वाचा, सम्बन्ध-सम्पर्क में स्वयं भी निर्विघ्न बाप समान बनें और औरों को भी उमंग-उत्साह में लाकर उनके सहयोगी बन उन्हों को भी निर्विघ्न बनावे। हर एक अपने सेवा-स्थान को निर्विघ्न बनाकर सभी की दुआयें लो।

25. कम से कम हर सेन्टर अपने-अपने साथियों के सहयोगी बन निर्विघ्न बनाने की सेवा में सफल बनें। चाहे सेवाकेन्द्र, चाहे स्वयं कहाँ भी रहते हैं, स्वयं को निर्विघ्न, संकल्प मात्र भी व्यर्थ समाप्त, ऐसे बने और बनाये। कोई कैसा भी है लेकिन आपका वायुमण्डल इतना पावरफुल हो जो आपका वायुमण्डल जहाँ तक पहुंचता है, वहाँ तक हर एक निर्विघ्न हो।

26. जो प्रैक्टिकल अपने साथियों को निर्विघ्न बनायेंगे उनको बापदादा प्रेजेन्ट (इनाम) देंगे लेकिन पहले थोड़ा इन्क्वायरी करेंगे। परिवर्तन तो होना ही है लेकिन उसके पहले जो भी छोटी मोटी बात है वह आपेही परिवर्तन कर लो। कहना नहीं पड़े। समझदार तो हो क्या करना है, क्या नहीं करना है! तो जो नहीं करना है वह नहीं कर लो, बस।

27. अभी लक्ष्य रखो कि जो भी एरिया आपको सेवा के लिए मिली है, उनको निर्विघ्न बनाना ही है क्योंकि राजधानी स्थापन करनी है। आधाकल्प राजधानी चलेगी तो इसके लिए थोड़ा चक्कर लगाके मेहनत करो, जो हेड हैं वह सभी जगह रहके समस्याओं को हल करो।

28. बापदादा बच्चों में विघ्न-विनाशक की विशेषता देख भी रहे हैं और देखने चाहते भी हैं। बाप का निर्विघ्न साथी बनकर चलने का पक्का संस्कार बनाओ। अटेन्शन है लेकिन अटेन्शन का अर्थ है नो टेन्शन। अभी आप निमित्त बने हुए बच्चे जब निर्विघ्न अवस्था के अनुभवी बनेंगे तब आपके निर्विघ्नता का वायब्रेशन पुरुषार्थी बच्चों को पहुंचेगा।

29. हरेक एक मास संकल्प में भी निर्विघ्न रहे, व्यर्थ संकल्प भी नहीं, स्टाप कहा स्टाप। अभी संकल्प के ऊपर अटेन्शन की आवश्यकता है। तो चेक करना हर एक संकल्प में भी निर्विघ्न रहे? जो सोचा वह हुआ? संकल्प भी व्यर्थ तो नहीं गये? कितनी भी वातावरण की माया हो, लेकिन वातावरण का प्रभाव मन के शुभ संकल्प में विघ्न रूप नहीं बने, इसमें सफलता हो।

30. आज बापदादा मन्सा संकल्प के तरफ अटेन्शन खिंचवा रहे हैं, जो निमित्त महारथी हैं अब मन्सा शक्ति के ऊपर अटेन्शन दो। वाणी और कर्म तो आटोमेटिकली ठीक हो ही जायेगा क्योंकि वेस्ट थॉट्स जो आवश्यक नहीं हैं वह भी टाइम ले लेते हैं। वह समय बचाना है।

31. मन्सा, वाचा और कर्मणा (सम्बन्ध-सम्पर्क) सबमें चेक करो कि वेस्ट कितना है, बेस्ट कितना है? इस शिव रात्रि पर बापदादा यही सौगात चाहते हैं कि व्यर्थ को समाप्त करो। बुराई के ऊपर तो अटेन्शन है लेकिन व्यर्थ के ऊपर भी अटेन्शन देने का होमवर्क बापदादा दे रहे हैं। लक्ष्य रखेंगे तो लक्ष्य से लक्षण स्वत: और सहज आ जायेंगे। फिर बापदादा एक एक बच्चे को तीव्र पुरुषार्थ का इनाम देगा।

32. जैसे बापदादा अभी चारों ओर के बच्चों को नयनों की दृष्टि देते हुए मिलन मना रहे हैं ऐसे सदा हर दिन इसी मिलन की खुशी और मौज़ में, हर सबजेक्ट में आगे बढ़ते चलो और जीवन के हर दिन होली (पवित्र) बन पवित्रता के वायब्रेशन चारों ओर फैलाते रहो।

33. जो सेकण्ड बीता वह होली, हो लिया (बीत गया)। अब बापदादा हर बच्चे को तीव्र पुरुषार्थी स्वरूप में देखने चाहते हैं। कोई भी बातें आयें, बातों का काम है आना लेकिन आप बच्चों का काम है बाप के दिल की दुआयें लेना।

34. सारा दिन ऐसे अनुभव करो कि बापदादा हमारे रक्षक बन साथ में हैं और बाप के साथ का अर्थ है - बाप जो कहे। अमृतवेले जो मुरली सुनते हो उसमें यादप्यार के साथ दुआयें हैं ही। तो रोज़ दुआयें लेते उड़ते चलो और उड़ाते चलो।

35. जो भी कुछ किया उसको आज होली पर बीती सो बीती कर आगे के लिए सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, रोज़ अमृतवेले इस वरदान को स्मृति में रख सारा दिन चेक करना और सफलता स्वरूप बनना।

36. ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न बनना ही है क्योंकि ब्रह्मा बाप साकार रूप में थे, अभी भी मददगार हैं इसलिए फालो ब्रह्मा बाप। माया के खेल देखते रहो, माया का काम है आना, आपका काम है विजय प्राप्त करना। तो सदा याद रहे कि मैं सफलता का विजयी रत्न हूँ।

37. कितनी भी छोटी-मोटी रूकावटें आयें लेकिन बाप के प्यार और नॉलेज के आधार से मैजारिटी बच्चे निर्भय बन आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहेंगे। किसी भी वायुमण्डल को देख उसके प्रभाव में न आकर बाप के स्नेह और सहयोग से आगे बढ़ भी रहे हो और बढ़ते रहना।

38. एक दो को देख उनकी विशेषता को देखना, दूसरी बातों को नहीं। एक दो की कमजोरी की बातें सुनते भी जैसे नहीं सुनो। खुद को भी आगे बढ़ाओ और साथियों को भी आगे बढ़ाते चलो। तीव्र पुरुषार्थी बन औरों को भी तीव्र पुरुषार्थी बनाओ। पुरुषार्थ में थकावट का अनुभव न हो।

39. सबके प्रति शुभ भावना के आधार से बढ़ते चलो, अपने उमंग-उल्हास का अनुभव सुनाते हुए एक दो के सहयोगी बनो। पुरुषार्थ में साथी ढीले होते हैं तो उनका थोड़ा-थोड़ा असर पड़ जाता है इसलिए अटेन्शन दो। बाप के डायरेक्शन पर सदा अटल रह हर कार्य में आगे बढ़ते और बढ़ाते रहना।

40. लक्ष्य रखो कि हमें नम्बरवन या नम्बर आठ तक आना ही है। वायुमण्डल क्या भी बनें लेकिन आप अपने वायुमण्डल से वायुमण्डल को परिवर्तन करो। सदा विजयी बनो और विजयी बनाओ।

41. पुरुषार्थ में कमजोर नहीं बहादुर बनो और बहादुर बनाओ। आपका टाइटल है मायाजीत। तो मायाजीत बनने की हिम्मत तो है ना! हिम्मत कभी नहीं हारना। बापदादा का सहयोग पहले है। हिम्मत हारा तो सब गया। हिम्मत है तो हिम्मते बच्चे मददे बाप है ही।

सेवा के प्रति

1. सारे कल्प में आत्मा परमात्मा का मिलन, परिचय, सम्बन्ध, वर्सा इस समय ही प्राप्त होता है। आप बच्चे इन सबके अधिकारी हो, तो आपको सर्व आत्माओं पर तरस आना चाहिए कि देश विदेश की कोई भी आत्मायें इस अधिकार से वंचित नहीं रह जायें।
2. आपका विशेष कार्य है कि किसी भी प्रकार से कोई एरिया ऐसी नहीं रह जाये जो उल्हना दे हमें परिचय ही नहीं मिला। हमारा बाबा आया और हमको पता नहीं पड़ा, यह जिम्मेवारी आप निमित्त बने हुए बच्चों की है, जहाँ तक हो सकता है वहाँ तक सन्देश जरूर दे दो।
3. हर एक अपनी एरिया के आसपास चेक करो कोई भी एरिया सन्देश के बिना रह नहीं जाए। हर एक का भाग्य अपना है लेकिन सन्देश देना आप भाग्यवान आत्माओं का फर्ज है। चाहे छोटा गांव है, चाहे बड़ा गांव है, शहर है, सबको सन्देश दे दो।
4. मैजारिटी मुख्य शहरों में पहुंच तो गये हो लेकिन फिर भी चेक कर लो कोई भी एरिया रह नहीं जाये जो आपको उल्हना देवे हमारा बाप आया और हमें पता नहीं दिया। तो अपनी-अपनी एरिया में जहाँ तक पहुंच सकते हो और कोई नहीं पहुंचा है, वहाँ सन्देश देना आपका कर्तव्य है।
5. किसी को भी भेजके कम से कम पता तो दे दो कि हम सबका बाप आया है। चाहे किसी भी प्रोग्राम से अपनी एरिया को पूरा करो, अगर छोटी एरिया है तो कोई छोटे को भेजो लेकिन वंचित नहीं रह जाए क्योंकि समय अचानक आना है, बताके नहीं आयेगा। तो चारों ओर सन्देश देने का कर्तव्य अवश्य पूरा करो।
6. जिस एरिया में कोई सेवा नहीं हुई है, तो जो साथी एरिया वाले हैं उनको बता के उन्हों को निमित्त बनाओ, कोई आत्मा रह नहीं जाये। सन्देश मिलना चाहिए, बाकी उन्हों का भाग्य। तो कोई छोटी गली है, साधारण लोग हैं, लेकिन बच्चे तो हैं ना, बाप आया है यह पता तो होना चाहिए। तो किसी भी रीति से सेवा करो, उल्हना नहीं रह जाए कि हमें तो पता ही नहीं पड़ा।
7. अगर दूसरे की एरिया है तो उनसे राय करो, बिना राय के नहीं करो, राय करो और सन्देश देने का कार्य पूरा करो। चाहे देश, चाहे विदेश सभी बच्चों को बापदादा इशारा दे रहे हैं कि बड़ों से राय करके उस द्वारा भी कराओ लेकिन कोई भी रह नहीं जाये।
8. विदेश में भी सेवा अच्छी कर रहे हैं लेकिन जितनी सेवा करते हो उतना समाचार कम देते हो इसके लिए कोई ऐसा मुकरर हो जो मास दो मास के बाद सब तरफ की रिजल्ट लिखके भेजे।
9. विदेशियों को देख बापदादा को अपना वर्ल्ड कल्याणकारी टाइटिल याद आता है। पहले सिर्फ इन्डिया कल्याणकारी था, अब विदेश एड हो गया है। सभी ने अच्छी मेहनत की है।
10. (हरिद्वार में सन्त सम्मेलन करना है) वहाँ के कोई साधू जो बड़े मशहूर हैं, उनमें से कोई निकले, यह सेवा करो। वह कहे ब्रह्माकुमारियों का ज्ञान हमने जीवन में लाया, ऐसे कोई मिसाल निकालो।
11. अब यह आवाज निकले कि ब्रह्माकुमारियां गीता का भगवान कृष्ण के बजाए शिव कहती हैं। तो यह आवाज निकलना चाहिए। पंजाब यह आवाज निकालेंगे तो प्राइज देंगे। चाहे मानें नहीं मानें लेकिन यह तो कहें इन्हों का यह मत है और इस पर सभी का सोच चले। करो कोई कमाल, सभी मिलके राय करो।
12. आप अपना सन्देश देने का काम बढ़ाते चलो, कोई उल्हना नहीं दे हम तो पास में, एक गली में रहते थे तो भी हमको पता नहीं पड़ा इसलिए जहाँ तक हो सके सन्देश तो मिले कि हमारा बाप आया। चले नहीं चले वह उन्हों के ऊपर है लेकिन आपकी तरफ से परिचय तो मिले, फिर पश्चाताप करेंगे।
13. जितना सेवा बढ़ा सको उतना बढ़ाते जाओ क्योंकि अचानक कुछ भी हो सकता है। बाप आया और चला जाए, बच्चों को पता ही नहीं पड़े! इसलिए जितना हो सके उतना सन्देश जरूर दो।